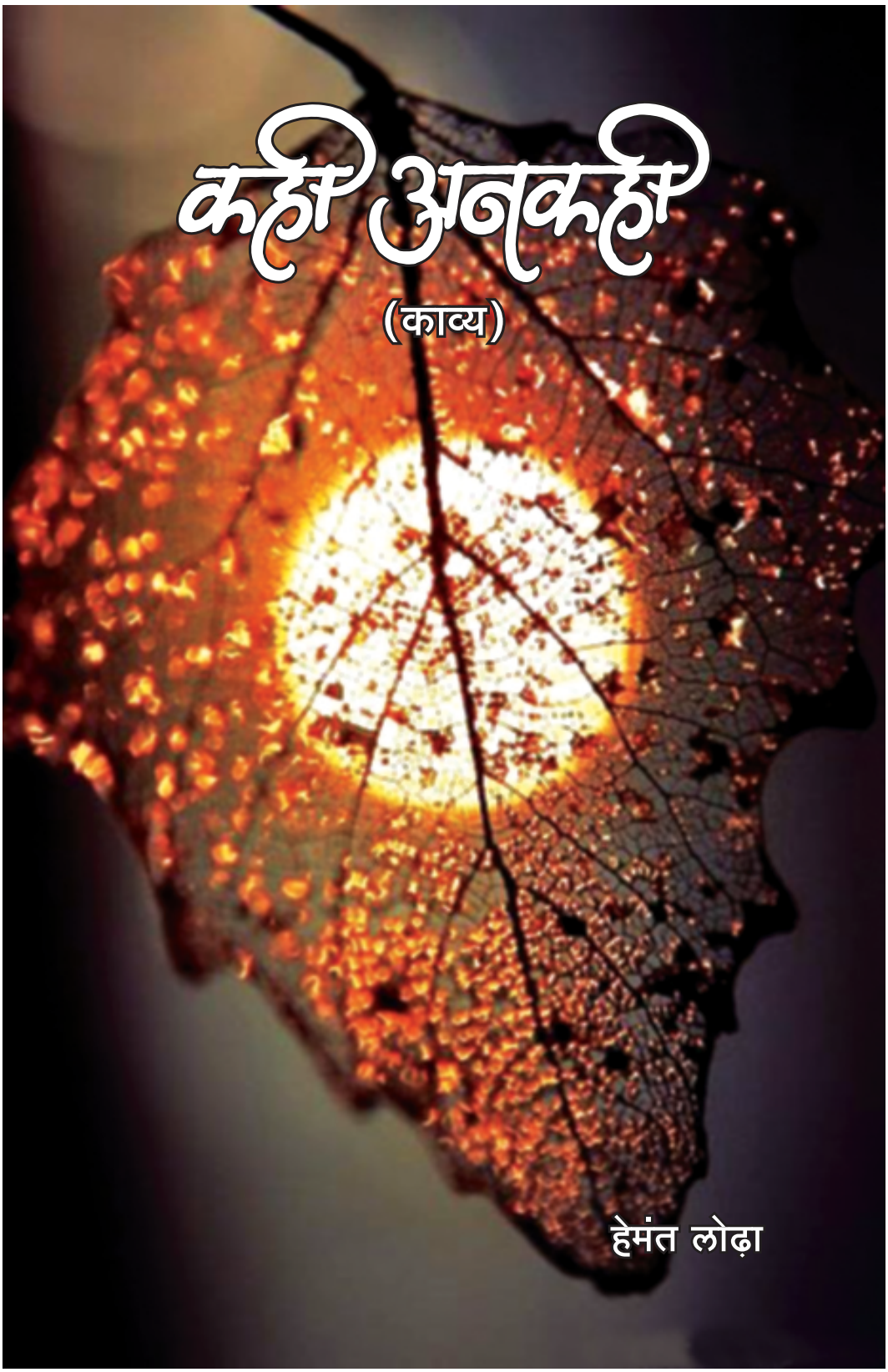
कही अनकही
(काव्य)
हेमंत लोढ़ा

कही अनकही

(काव्य)

हेमंत लोढ़ा

सृजन बिंब प्रकाशन

कही-अनकही

कवि

हेमंत लोढ़ा

मुखपृष्ठ

सी.डी. शिवणकर

ई-मेल :
lodhah@gmail.com

सृजन बिंब प्रकाशन
301, सनशाइन - 2, के.टी. नगर,
काटोल रोड, नागपुर - 440013
मोबा. : 8208529489 (रीमा)
9373271400 (अविनाश)
ई-मेल : srijanbimb.2017@gmail.com

मुद्रक : स्कॅन डॉट कॉम्प्युटर, महाल, नागपुर.
मोबा. : 9822565782

प्रथम संस्करण : 2019
मूल्य : सप्रेम

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

ISBN : 978-81-941621-0-0

Collection of Poems - Kahi-Ankahi by Hemant Lodha

सृजन बिंब से...

सृजन बिंब के शैशवकाल से ही अपनी सृजन यात्रा को हमारे साथ जोड़ते हुये मानवीय संवेदनाओं से गहरे तक जुड़े हुए आदरणीय हेमंत लोढ़ा जी भगवत गीता - रूप कविता व अष्टावक्र महागीता के दोहा रूपांतरण के साथ ही साहित्यिक समूहों ''हाइकु-ताँका प्रवाह'' और ''छंद-बद्ध : लय बद्ध'' के माध्यम से बखूबी अभिव्यक्त होते आये हैं।

उनकी इतनी सारी कोमल कही-अनकही अभिव्यक्तियों को एक स्थान पर लाने का प्रयास ही उनका अगला सृजन पड़ाव है जिनमें उनकी कविताओं, हाइकु, ताँका व दोहों की जुगलबंदी है।

सतत धर्म के सार तत्वों को सरल दोहों में प्रस्तुत करने के प्रयासों के बीच हेमंत जी की ये कही-अनकही सृजन बिंब के माध्यम से आप तक पहुँच रही है।

आशा और विश्वास है कि उनकी इस कृति को भी आपका यथोचित स्नेह मिलेगा...

- अविनाश बागड़े

- रीमा दीवान चड्ढा

हाशिये पर...

श्री हेमंत लोढ़ा सुलझे हुए परिपक्व इंसान होने के साथ-साथ अनुभवी व्यवसायी और कविता के मर्म को समझने वाले प्रबुद्ध कवि हैं। इसके पूर्व भी इनकी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में इन्होंने दोहे के चमत्कार दिखाए हैं। दरअसल दोहा एक ऐसी काव्य विधा है जो लुप्त होने की कगार पर है । सृजन बिंब के सहयोग से हेमंत लोढ़ा जैसे कवि इस विधा को जीवित रखे हुए हैं । नागपुर क्षेत्र में दोहे पर बहुत कार्य हो रहा है... दोहा संग्रह प्रकाशित हो रहे हैं और इसमें सृजन बिंब प्रकाशन के हमारे अनुज अविनाश बागड़े और श्रीमती रीमा चड्ढा का विशेष योगदान है।

दोहे को लुप्त होती विधा मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि काव्य की कई विधाएं धीरे-धीरे इस तरह हमसे दूर हो गई हैं कि हममें से कइयों को आज उनके नाम और स्वरूप का भी ज्ञान नहीं है। एक समय था जब दोहा अपनी लोकप्रियता की चरम सीमा पर था पर धीरे-धीरे इसकी उपयोगिता कम होती चली गई। मंचों पर दोहों को वह स्थान नहीं मिला जो मिलना चाहिए था। काफी पहले से पत्र-पत्रिकाओं तथा संचार के अन्य माध्यमों में दोहे ने अपनी उपस्थिति खोनी शुरू कर दी है और भविष्य में यह निश्चित रूप से गायब हो जायेगा यदि हेमंत लोढा जैसे कवि तथा सृजन बिंब जैसे प्रकाशन

संस्थान इसके समर्थन में खड़े नहीं होंगे। दोहा मानवता की भाषा बोलता है। मानव जीवन तथा समाज के हर अंग से संबंधित कोई भी बात ऐसी नहीं है जिसे लोढ़ा जी ने अपने दोहों में स्थान न दिया हो। इसके साथ ही लोढ़ा जी ने ग़ज़लनुमा दोहे लिखकर एक चकित करने वाला अनूठा प्रयोग किया जिसमें वे काफी हद तक सफल भी रहे हैं।

साथ ही जापानी विधा हाइकु-ताँका पर हेमंत जी की सशक्त पकड़ दिखाई देती है। अपनी कविताओं में अपने मन के भाव सहज रूप से हेमंत जी ने अभिव्यक्त किये हैं। एक ही पुस्तक में दोहे, हाइकु-ताँका व कविताओं का सुंदर संगम हमें **कही-अनकही** में देखने मिलेगा।

मुझे विश्वास है कि लोढ़ा जी की यह पुस्तक निश्चित ही साहित्य जगत में बहुत पसंद की जाएगी।

मैं उन्हें शुभकामनाएँ देता हूँ और साथ ही बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ सृजन बिंब के अविनाश और रीमा को जिन्होंने इतनी अच्छी पुस्तक प्रकाशित कर साहित्य प्रेमियों को उपकृत किया है।

- डॉ सागर खादीवाला
वरिष्ठ साहित्यकार
मोबा. 9422848484

मंतव्य

अगर मैं पीछे मुड़ कर देखता हूँ तो अहसास होता है कि मन कविमय शुरु से ही रहा। हमारे ज़माने मे प्रेम पत्र लिखने का चलन था और मैने प्रभा को सगाई होने के बाद जब भी पत्र लिखा, कुछ छोटी कविताएँ मन के उद्‌गार के रुप मे हमेशा लिखता था। आज भी उसने वो प्रेम पत्र संभाल के रखे हैं। हिंदी मीडियम मे पढ़ाई होने के कारण व राजस्थान से जुड़े होने से हिंदी भाषा से हमेशा नाता रहा है।

९-६ वर्ष पूर्व एक हाइकु पुस्तक के विमोचन में जाने का अवसर मिला और मेरी भी रुचि हाइकु लिखने में जागृत हुई। फिर अविनाश जी से मुलाक़ात हुई और हमने हाइकु व छंदबद्ध व्हाट्‌सएप ग्रुप शुरु किया तो दोहे लिखने की कला भी आ गई। श्रीमद्‌भगवदगीता, अष्टावक्र महागीता व समणसुत्तं का रुपांतरण दोहों में करते हुए कभी-कभी हाइकु, कविता व दोहे भी लिख लेता हूँ।

दोहों में विदुषी सुधा राठौर जी ने संशोधन करने में मनोयोग से जो कार्य किया है उन्हें धन्यवाद करने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है।

कही-अनकही उन्हीं सब कविताओं, हाइकु व दोहों का संग्रह है। आशा है आप लोगों को पसंद आएगा।

- हेमंत लोढ़ा

जीवन संगिनी

प्रभा लोढ़ा

को

सम्मानार्थ समर्पित...

अनुक्रम

1. दोहावली 09
2. हाइकु 59
3. ताँका 75
4. कविताएँ 79

दोहावली

''**गागर में सागर**'' भरने का उदाहरण देना हो तो जानकार लोग 'दोहे' का नाम लेते है। कमाल का मात्रिक छंद है ये। तेरह-ग्यारह, तेरह-ग्यारह मात्राओं वाला यह छंद अपनी दो पंक्तियों में जीवन-दर्शन उंडेल देता है। छान्दस रचना होने के कारण पढ़ने और सुनने वाले को सहज रूप से याद भी रह जाती है। आज अगर कबीर, तुलसी और रहीम के दोहे स्मृति-पटल पर अंकित हैं, तो इसका यही एक कारण है कि वे न केवल सहज-सरल हैं, वरन उनमें हमारे मर्म को छूने की ताकत भी है। शताब्दियाँ बीत गई, कितने राजे-महाराजे मर-खप गए, लेकिन सच्चे कवियों ने जो दोहे-चौपाइयाँ रचीं, वे हमारे जीवन के मन्त्र बन गए। आज भी जब हम परेशानियों में होते हैं या किसी को समझाने की कोशिश करते हैं तो हमारे पास चंद दोहे होते हैं, जो बड़े सटीक बैठते हैं।

दोहा शक्तिशाली छंद है। यह कालजयी हो सकता हैं। बशर्ते वैसी साधना भी हो। मेरा मानना है कि कबीर, तुलसी और रहीम जैसे कवि एक बार ही पैदा होते है, लेकिन हम उनकी परंपरा को आगे बढ़ाने की कोशिश तो कर ही सकते हैं। बेशक यह हो सकता है, कि हम उनके स्तर तक पहुँच ही न पायें मगर उस दिशा में साधना तो की ही जा सकती है। यही बड़ी बात है।

(अविनाश दोहावली से साभार)

- गिरीश पंकज

संपादक 'सद्भावना दर्पण'

पहला क़दम बढ़ाइये, चलना मील हज़ार ।
रुको कभी ना राह में, जय - जय बारंबार ।।१।।

असली नेता है वही, ले जो गलती मान ।
और सफलता के लिए, दे सबको सम्मान ।।२।।

नहीं रखा तुमने अगर, लालच से मन दूर ।
अवसर जायेंगे सदा, चिड़िया जैसे फूर ।।३।।

पाना है तुमको अगर, प्यार व यश सम्मान ।
दोनों हाथ लुटाइये, प्रेम सहज ये दान ।।४।।

वादों से होता नहीं, कर्मों का संचार ।
अगर सफलता चाहिये, कर लो काम हज़ार ।।५।।

क्या भविष्य के गर्भ में, छिपा न जाने कोय ।
रखिये तीर संभाल के, कभी ज़रूरत होय ।।६।।

जो तरकश में बाण हो, साहस का हो भान ।
मिट जातीं सब मुश्किलें, हो अगर रामबाण ।।७।।

कौन रोक दुःख को सके, किसकी रहे कमान ।
सहना हम जो सीख लें, जीवन हो आसान ।।८।।

सम्मानित होते नहीं, आप ज्ञान गुण जान ।
व्यवहारिकता ज्ञान की, दिलवाती सम्मान ।।९।।

मन में जो विश्वास हो, रहे खुदा भी साथ ।
घाटी का फिर क्या कहें, चढ़ना अपने हाथ ।।१०।।

अंधकार से जो हमें, हाथ पकड़ ले जाय ।
चाहे जीव अजीव हो, वही गुरु कहलाय ।।११।

निम्बोड़ी सा धैर्य है, कड़वा इक अहसास ।
साध्य इसे जो कर सके, जीवन घुले मिठास ।।१२।।

निंदा करनी हो अगर, सोचें बारम्बार ।
करें प्रशंसा वक़्त पर, मत कतराना यार ।।१३।।

कहाँ गई बुद्धि तेरी, कहाँ खो गया ज्ञान ।
मोह वस्तुओं का करे, हरे जीव के प्राण ।।१४।।

दुखी समझ मुझको सभी, हमदर्दी दिखलाय ।
मगर खुशी उनके कभी, गले उतर ना पाय ।।१५।।

पड़े - पड़े लगने लगे, लोहे में भी जंग ।
अगर योग भी ना किया, लकड़ी होगी संग ।।१६।।

गुस्सा कभी न कीजिए, होगा ख़ाक तमाम ।
कारण से घातक रहे, सदा क्रोध परिणाम ।।१७।।

मिथ्या फैली इस तरह, जैसे मायाजाल ।
चेहरों पर चेहरे चढ़े, सच का पड़ा अकाल ।।१८।।

जब भी देखूँ पेड़ को, मन माने आभार ।
वृक्षारोपण जो करूँ, उतरेगा ये भार ।।१९।।

पता उसी से पूछिए, जो मंज़िल हो आय ।
अज्ञानी को पूछ के, मोक्ष कभी ना पाय ।।२०।।

लगे धरा को प्यास जब, नभ अमृत बरसाय ।
तकलीफों के नाम पे, तू क्यों आड़े आय ।।२१।।

हमको तुम पर नाज़ है, सेना वीर - जवान ।
भले साथ तन से नहीं, मन से है सम्मान ।।२२।।

मन वचन और कर्म में, न्याय सत्य का वास ।
बढ़े साख और मित्रता, सकल जैन विश्वास ।।२३।।

चाहत सुख-आनंद की, रखिए सरल स्वभाव ।
सादा जीवन जो जिये, देते हैं सब भाव ।।२४।।

रंग, रूप औ धैर्य की, अलग - अलग पहचान ।
अनेकता में एकता, ऐसा हिंदुस्तान ।।२५।।

माफ़ी की महिमा बड़ी, रहे गलतियाँ बाद ।
जो तोड़ा विश्वास तो, माफ़ी रहे न याद ।।२६।।

पूजन पाहन का किया, जगत हुआ पाषाण ।
कंकर से जो प्रीत की, संकट में हो प्राण ।।२७।।

हर पल अमृत मान के, करिए शब्द प्रयोग ।
मौन से बेहतर तभी, शब्दों का उपयोग ।।२८।।

पढ़ना हमको इस तरह, जीना अनंत काल ।
जीना भी ऐसे हमें, पल में मृत्यु अकाल ।।२९।।

अगर सफलता चाहिए, छोड़ बहाने यार ।
कर्म और आलस्य में, कभी न होगा प्यार ।।३०।।

विजय-रथी बढ़ता रहे, युद्ध कर रहे आप ।
लड़ना अपने आप से, दुश्मन भी हैं आप ।।३१।

अगर सफलता चाहिए, करिए सतत प्रयास ।
चींटी सा चलते रहें, कभी न छोड़े आस ।।३२।।

जो सेवन तुलसी करे, तन पाए आराम ।
शुद्ध सुधा तुलसी बने, मन धारे श्री राम ।।३३।।

कड़वे अनुभव ही मिलें, फिसले अगर ज़ुबान ।
सीमाओं में शब्द हों, बनी रहे मुस्कान ।।३४।।

अर्थ मिले जब मौन को, पाए शब्द विराम ।
लोक वासना से निकल, मन भाये श्री राम ।।३५।।

अज्ञानी के शब्द से, हुआ सत्य का नाश ।
ऐसे वचनों पर कभी, करें नहीं विश्वास ।।३६।।

माखन दिखे न दूध में, बूँदन बीच छुपाय ।
ऐसे ही हरि नाम भी, कण-कण रहत समाय ।।३७।।

कथा सफलता की सदा, देती है उपदेश ।
असफलता भी काम की, इसमें भी सन्देश ।।३८।।

शब्दों की महिमा बड़ी, सुर-लय से संगीत ।
सुर बिगड़े जो आपके, डूबी सबकी प्रीत।।३९।।

ज्ञानी की संगत रहे, मिले सदा ही सीख ।
जो संगत हो मूढ़ की, भीख मिले ना सीख ।।४०।।

मिल जाये पारस तुझे, पल में कनक बनाय ।
सतगुरु ऐसा खोजिए, पारस तू बन जाय ।।४१

खुली जगत में आँख जो, मिला कोष अनमोल ।
रहो समर्पित कर्म में, बजे नाम के ढोल ।।४२।।

कहती देह पुकार के, समय मुझे दो आज ।
जब आयेंगे रोग तो, आऊँ तेरे काज ।।४३।।

हीरा उसे न बेचिए, जो ना समझे मोल ।
छोड़ो उनका साथ जो, बुद्धि सके ना तोल ।।४४।।

एक झूठ से आपके, लगे सत्य पर प्रश्न ।
साथ न छोड़ें सत्य का, जीवन होगा जश्न ।।४५।।

तज मत अपने काज को, जारी रहे प्रयास ।
चलें निरन्तर जो अगर, रहे विजय की आस ।।४६।।

चले सत्य के मार्ग जो, सतगुरु वो बन जाय ।
जो सतगुरु के साथ है, भव से वो तर जाय ।।४७।।

रहे चपल जो सोच में, रखते चित्त सचेत ।
वाणी पर अंकुश रखे, तो फल भगवन देत ।।४८।।

दो और दो पाँच बने, मिलकर कर लें काम ।
आपस में झगड़े अगर, लग जायेंगे दाम ।।४९।।

खुशियों के कारण कई, नई नहीं यह बात ।
बिन कारण हम खुश रहें, उत्तम मानव जात ।।५०।।

सोच नियंत्रण में रखें, व्यक्ति बने विशेष ।
बुद्धि बिना लगाम रहे, बचे न कुछ भी शेष ।।५१।।

बदलेंगे कल मानिए, भाषा देश समाज ।
दूरदृष्टि रखकर सदा, कर्म करेंगे आज ।।५२।।

मालिक वही भविष्य का, सपने बुनें हज़ार ।
रहे इरादे ठोस तो, जय हो बारम्बार ।।५३।।

खुशियाँ घर में भर गए, आँगन आप पधार ।
ऋद्धि-सिद्धि द्वारे खड़ी, आदर पालनहार ।।५४।।

क्षमा वीरस्य भूषणम्, क्षमा वीर की शान ।
पर्यूषण के पर्व पे, करिये क्षमा निधान ।।५५।।

अन्तरमन को जो सुने, बढ़े क़दम के साथ ।
नतमस्त सद्बुद्धि हो, लगे सफलता हाथ ।।५६।।

तन मन बुद्धि से बँधे, रिश्ते बने अनेक ।
परम आत्मा से जुड़े, बिरला कोई एक ।।५७।।

भेद नहीं है प्राण में, जीवों में दिखलाय ।
काट किसी की देह को, कैसे तू सुख पाय ।।५८।।

रामानंद मिले जिसे, वो कबिरा हो जाय ।
तब अविनाशी रुप ही, दोहा बने सुहाय ।।५९।।

खुली खिड़कियाँ बुद्धि की, जो रखते श्रीमान ।
नई निराली सोच को, रस्ता दे भगवान ।।६०।।

आज कहे मिथ्या वचन, करें हमें मजबूर ।
बने पिरामिड झूठ के, अपने भागें दूर ।।६१।।

पथ को रौशन कर सके, गुरु ज्ञान की ज्योत ।
पर मंजिल की प्राप्ति को, खुद ही चलना होत ।।६२।।

मन की पहुँच असीम है, शक्तिवान है ज्ञान ।
कायनात को खींच ले, सपनों में हो जान ।।६३।।

जो तेरे अधिकार में, दाता कर दे दान ।
तेरी हद से है परे, विधि का सदा विधान ।।६४।।

नहीं प्रगति हासिल हमें, राहें जो आसान ।
करती हैं कठिनाइयाँ, हर विकास गतिमान ।।६५।।

सूरज जो सम्मान दे, लौ को अपना मान ।
हो विभोर मन भाव सब, जीवन हो वरदान ।।६६।।

तन से पत्थर हो भले, कहलाता भगवान ।
मन से जो पत्थर बने, फिर भी वो इंसान ।।६७।।

रहना हो आनंद से, मन को समझो तात ।
अंतर्मन को जान लो, शांति मिले पर्याप्त ।।६८।।

मानवता एकात्म की, मुखर होय हर हाल ।
अंत्योदय से ही बढ़े, कहते दीनदयाल ।।६९।।

तरल रहूँ जल की तरह, अपना लूँ हर पात्र ।
तजूँ धर्म अपना नहीं, रहूँ मैं मानव मात्र ।।७०।।

निज क्षमता सन्देह से, बढ़े भावना हीन ।
सपन सदा साकार हो, रहें काम में लीन ।।७१।।

पाना जो सम्मान हो, पहल कीजिये आप ।
दोगे अपना प्यार तो, फैलेगा परताप ।।७२।।

घुन जैसे खा जाएँगे, मोह माया व द्वेष ।
प्रेम दवाई दो मिला, कुछ न रहेगा शेष ।।७३।।

दुश्मन सम्मुख नत रहें, अवसर किया प्रदान।
दुश्मन के बिन है नहीं, कभी जीत की शान ।।७४।।

दुःख पहाड़ लगने लगे, पर्वत लगे तनाव ।
जल तल पर रखिए उसे, तैरे जैसे नाव ।।७५।।

कृषक रोज मरते रहें, अनशन करें जवान ।
बापू तेरे देश में, नेता अब हैवान ।।७६।।

भूख प्यास सब भूल कर, कठिन चढ़ाई पार ।
प्राणों की चिंता नहीं, फिर भी है तैय्यार ।।७७।।

राज़ सफलता का यही, अभी करो शुरुआत ।
पग आगे बढ़ते रहें, दिन देखो ना रात ।।७८।।

जो अपनाना हो नया, त्याग भूत को आज ।
पतझड़ के आग़ोश में, सावन का आग़ाज़ ।।७९।।

मिट जाती है दूरियाँ, इंसानों के बीच ।
शब्द ज़रूरी हैं नहीं, मुस्कानों को सींच ।।८०।।

बिना रुके चलता रहे, बिना अहं आवाज़ ।
सूरज से कुछ सीख ले, उम्दा जीवन-राज़ ।।८१।।

समय तभी आराम का, समय नहीं जब पास ।
मिलता तन-मन बुद्धि को, अपना-अपना ग्रास ।।८२।।

रचनात्मक ही कर्म में, मन और बुद्धि होय ।
ऐसे यज्ञों का फलित, सचमुच अद्‌भुत होय ।।८३।।

अगर प्यास हो ज्ञान की, मिले ज्ञान चहुँ ओर ।
कविता हो या हो कथा, लेखन करे विभोर ।।८४।।

दो बातें अपनाइये, दोनों बड़ी महान ।
कारज़ अपने जानिये, छिड़को सब पे जान ।।८५।।

दो बातें अपनाइये, दोनों बड़ी महान ।
बुरा कभी ना देखना, दो न बुरे पे कान ।।८६।।

दो बातें अपनाइये, दोनों बड़ी महान ।
फल की आशा छोड़ के, करे कर्म इंसान ।।८७।।

दो बातें अपनाइये, दोनों बड़ी महान ।
माफ़ी दे दो भूल को, निर्धन को दो दान ।।८८।।

दो बातें अपनाइयें, दोनों बड़ी महान ।
मात-पिता को मान दो, बच्चों को दो ज्ञान ।।८९।।

दो बातें अपनाइये, दोनों बड़ी महान ।
गुरु समझ हर जीव में, कण-कण में भगवान ।।९०।।

दो बातें अपनाइये, दोनों बड़ी महान ।
निर्बल को सहयोग दो, बल को दो सम्मान ।।९१।।

किसने समझा भाग्य का, जटिल हिसाब-किताब ।
लगे रहो सत्कर्म में, देना 'उसे' जवाब ।।९२।।

लेकर छाया भाग्य की, मूरख-मति कहलाय ।
अच्छे कर्मों से सदा, भाग्यवान बन जाय ।।९३।।

गम की करें नुमाइशें, होता सदा मज़ाक ।
कुछ को आता है मज़ा, बाकी समझे खाक ।।९४।।

दुखी नहीं दुःख कर सके, सुख का भी ना भान ।
ऐसे जातक को नरक, लगता स्वर्ग समान ।।९५।।

ना जादा ना कम कहीं, सबके पास समान ।
करे समय उपयोग जो, बनता वही महान ।।९६।।

ना ना करके काम में, मत डालो व्यवधान ।
मुख पर ताले डाल लो, होता कर्म प्रधान ।।९७।।

मन जब भी मन्दिर बने, भटके कहीं न और ।
अन्तर्मन में झाँक ले, ईश्वर का है ठौर ।।९८।।

चिंतन कर के सोच ले, सब कुछ अपने हाथ ।
कर्म आपके आज के, कल को होंगे साथ ।।९९।।

विडम्बना कैसी हुई, माँग रहे विश्वास ।
वार मुझे जीवन दिया, तुम हो मेरी आस ।।१००।।

मैं ही अर्जुन - केशवा, कौरव-पाण्डु जान ।
गीता, महाभारत हूँ, मुझे कर्म फल मान ।।१०१।।

भीतर ही शैतान है, भीतर है भगवान ।
मगर प्रेम जिससे करें, वो ही रखता ध्यान ।।१०२।।

वस्तु-मोह व्यक्तित्व का, बस अपना आकार ।
जो देखूँ बिन राग के, सब कुछ बिन आकार ।।१०३।।

शब्द-शब्द जब तौल के, बाहर निकलें तात ।
जनता समझे लोक में, ज्ञानी उसकी जात ।।१०४।।

खुशियाँ जीवन में भरे, दीपों का त्योहार ।
हो आपस में प्रेम भी, दुख का हो संहार ।।१०५।।

गीत छंद कविता, ग़ज़ल, बन जब मिलते मीत ।
अद्‌भुत यह संगम सदा, ज्ञान और संगीत ।।१०६।।

उठे नहीं पहला क़दम, लगे असंभव काम ।
शुरू करें अंताक्षरी, लेकर प्रभु का नाम ।।१०७।।

पत्थर मारा पेड़ को, देता फल टपकाय ।
जो समझे इस बात को, बुद्ध वही बन पाय ।।१०८।।

बिन चरित्र के योग्यता, प्राण विहीन शरीर ।
साथी उत्तम है वही, जहाँ सत्य है पीर ।।१०९।।

सुख-दुख तो आते रहें, समझें एक समान ।
ऐसे ही मन में रहें, खुशियाँ सीना तान ।।११०।।

अमर नहीं कोई हुआ, आती जीवन शाम ।
काम करे निष्काम तो, सदा रहेगा नाम ।।१११।।

सुख की ज्योत जलाइये, हो खुशियाँ चहुँ ओर ।
सच्ची सेवा है यही, नाचे मन का मोर ।।११२।।

भय से कुछ हासिल नहीं, हो आशा-विश्वास ।
अगर सफलता चाहिए, रख उम्मीदें पास ।।११३।।

जब सह, ईश व अणु मिले, हो सहिष्णु निर्माण ।
बाहर से हम हैं अलग, भीतर एक ही प्राण ।।११४।।

ज्ञान बढ़े ना बोल से, भूल बोल का ज्ञान ।
वो जन ही पंडित बने, खुले रखे जो कान ।।११५।।

रखे काम से काम जो, उसके सब हों काम ।
नहीं काम की कामना, काम रहित हो काम ।।११६।।

कलयुग के इस दौर में, कौन है बुद्धिमान ।
ज्ञानार्जन जो कर रहें, खोले आँख व कान ।।११७।।

वर्ण वर्ग जाति धरम, हो कैसा भी भेद ।
प्रेम बसे मन में यदि, नहीं रहेगा ख़ेद ।।११८।।

चोट लिखो जो रेत पे, जल्दी से मिट जाय ।
पत्थर पे लिख दो अगर, कभी न मिटने पाय ।।११९।।

'अच्छा' जब सम्भव लगे, रोको नहीं प्रयास ।
चाहे फल हो ठीक भी, 'उत्तम' की हो आस ।।१२०।।

ज्ञान उतरता शास्त्र में, शास्त्र पुस्तक रुप ।
किंडल अब पुस्तक हुई, ये भी ज्ञान स्वरूप ।।१२१।।

उम्मीदें दुनिया करे, जब तुम से श्रीमान ।
ख़ुद को आभारी समझ, जग से पाया मान ।।१२२।।

जगत भरोसा ना करे, ना खुद पे विश्वास ।
जगत विजय जो चाहिए, रखो आत्मविश्वास ।।१२३।।

हाथ मेरे आयु नहीं, निर्णय ले भगवान ।
उत्तम मानव बन सकूँ, बना रहे सम्मान ।।१२४।।

शब्द निरर्थक हों अगर, करें न ज्ञानी व्यर्थ ।
मितव्ययता हो शब्द में, बनता वही समर्थ ।।१२५।।

जहाँ जीतना लक्ष्य है, करते रहते काम ।
कर्म अगर वश में नहीं, उनका काम तमाम ।।१२६।।

आप कदाचित हों सही, सही आपकी बात ।
इसका मतलब यह नहीं, ग़लत और की बात ।।१२७।।

नहीं ज़रूरी नाम हो, करने से कुछ काम ।
काम ज़रूरी है मगर, तभी बनेगा नाम ।।१२८।।

सपन मान कर लक्ष्य को, क़दम उठे उस ओर ।
मंज़िल होगी आपकी, करिए कर्म कठोर ।।१२९।।

चारदिवारी में सदा, रखो धर्म को कैद ।
हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख का, रहे न बाहर भेद ।।१३०।।

होती झूठे मीत की, परछाई आभास ।
साथी तब तक ही रहें, जब तक पड़े प्रकाश ।।१३१।।

ख़ुशी मिले उस काम में, जग ना माने हार ।
अगर सफलता मिल गई, चमत्कार के पार ।।१३२।।

तम को करती दूर ज्यों, नन्हीं सी इक ज्योत ।
भय रहता त्यों दूर ही, ज्ञान संग जो होत ।।१३३।।

सद्गुण जल से लीजिये, जिसका ना आकार ।
पात्र कैसा भी मिले, अपना ले संसार ।।१३४।।

मन मिला हर जीव को, मिले ढेर से भाव ।
पर मुद्रा इंसान की, जग पर करे प्रभाव ।।१३५।।

भाषा है हर जीव की, लिपि मानव का ज्ञान ।
पशु मानव में फर्क यह, इसने दी पहचान ।।१३६।।

भाषा है हर जीव की, लिपि मनुज का ज्ञान ।
मुख-मुद्रा इंसान की, जग में दे पहचान ।।१३७।।

प्रतिक्रिया सब ही करें, करें अकारण काज ।
कर्म करे निष्काम जो, समझे वो ही राज ।।१३८।।

पत्ता रहता पेड़ पे, देता ठंडी छाँव ।
क़दमों में जब वो गिरे, नहीं अहं का भाव ।।१३९।।

कब कैसे औ क्यूँ कहाँ, कौन करे क्या काम ।
जो सोचे हर बात को, उसका होगा नाम ।।१४०।।

मुश्किल है करना खड़ी, एक सफल मीनार ।
जब तक गारे में नहीं, असफलता के हार ।।१४१।

ना छोटा ना है बड़ा, तेरा कहीं मकान ।
तेरे मन की कल्पना, तेरा झूठा ज्ञान ।।१४२।।

कड़वे शब्दों का करें, उसी समय उपयोग ।
जब भी मीठे शब्द का, धीमा पड़े प्रयोग ।।१४३।।

असर करे शुभकामना, दे अमृत का काम ।
व्याप्त कहीं विष हो अगर, करता काम तमाम ।।१४४।।

चिल्लाओगे क्रोध में, समझेंगे यह लोग ।
नहीं नियंत्रण सोच पे, है इसको यह रोग ।।१४५।।

रखना सच्चे मित्र का, एक अनोखा राग ।
निभे तभी यह मित्रता, करें अहं का त्याग ।।१४६।।

तिमिर बड़ा घनघोर है, तल हो या आकाश ।
गुरु अविनाशी जब मिलें, फैले जगत प्रकाश ।।१४७।।

चलने के पहले हमें, मंज़िल का हो ज्ञान ।
लक्ष्यहीन हो सोच तो, होय कर्म अपमान ।।१४८।।

दोनों आँखे बंद कर, कर लो शिव का ध्यान ।
तीजी जब खुल जायगी, होय आत्म का ज्ञान ।।१४९।।

सुन्दर वह मुस्कान है, आए जब हो हार ।
मुस्काता मुख देख कर, हार मानती हार ।।१५०।।

सुंदर या बदशक्ल हो, ख़ुशबू हो या बास ।
नाद शंख, भौंके कहीं, फर्क पड़े ना ख़ास ।।१५१।।

माँ, बहना, पत्नी, सखा, चाहें सब सम्मान ।
प्रेम उन्हें सादर करें, तभी बढ़ेगा मान ।।१५२।।

वशीभूत मन-बुद्धि के, कहना उसका मान ।
इंद्रिय वश जो मन रहे, सुनना मत श्रीमान ।।१५३।।

जो मितभाषी मितव्ययी, बन जाते हैं मीत ।
मितभोगी जब है बने, समझो जग पर जीत ।।१५४।।

अपना दूजा कौन है, भान नहीं हो पाय ।
मिले परम आनन्द तब, अन्तर जब मिट जाय ।।१५५।।

चींटी हो या शेर हो, सब में मीत समाय ।
मिले परम आनन्द तब, अन्तर जब मिट जाय ।।१५६।।

राजा हो या रंक हो, सभी गले लग जाय ।
मिले परम आनन्द तब, अन्तर जब मिट जाय ।।१५७।।

रात रहे या दिन रहे, चन्दा-सूरज भाय ।
मिले परम आनन्द तब, अन्तर जब मिट जाय ।।१५८।।

मीठा तीखा सम लगे, स्वाद एक ही आय ।
मिले परम आनन्द तब, अन्तर जब मिट जाय ।।१५९।।

राग-द्वेष बचते नहीं, मन समग्र हो जाय ।
मिले परम आनन्द तब, अन्तर जब मिट जाय ।।१६०।।

सुख-दुख क्या समझूँ नहीं, दोनों एक उपाय ।
मिले परम आनन्द तब, अन्तर जब मिट जाय ।।१६१।।

लोग कहे मैं जानता, मैं ना जानूँ आप ।
हम सब भ्रम में ही रहे, मिथ्या वार्तालाप ।।१६२।।

उचित दिशा आशा उचित, जगमग मन के दीप ।
अपना आज न खोइये, आस ख़ुशी की सीप ।।१६३।।

त्यागो मत उत्साह को, मिले कभी जो हार ।
ना हीं उछलो जोश में, ताली मिले हज़ार ।।१६४।।

लक्ष्य कभी भटके नहीं, धर्म न छोड़े साथ ।
नर में नहीं विवेक जिस, नियति छोड़े हाथ ।।१६५।।

राग द्वेष का हो हवन, पनपे दिल में प्यार ।
रंग संग खुशियाँ मिले, होली का त्यौहार ।।१६६।।

फड़के सारी इन्द्रियाँ, तेरा हुआ ख़याल ।
मिलो मुझे हर जन्म में, बिछड़ो किसी न काल ।।१६७।।

मन छूने का है करे, होती जब तू पास ।
आलिंगन में लूँ तुझे, रह ना जाए आस ।।१६८।।

खुशबू तेरी पास में, महके फूल गुलाब ।
चढ़े नशा इस ज़हन ज्यों, मादक तरल शराब ।।१६९।।

पाने को तेरी झलक, अँखियाँ देखे बाट ।
तुम जब आओ सामने, दूजे मन को काट ।।१७०।।

आहट तेरी कान में, लगती है झंकार ।
शब्द निकलते होंठ से, मन को मिले क़रार ।।१७१।।

चित्रों की ताक़त बड़ी, कह दे शब्द हज़ार ।
शब्द जाल बुनते बड़े, कहते चित्र विचार ।।१७२।।

वादा करता मैं यही, फ़िकर न करना यार ।
जब तक मेरी साँस है, होगा मेरा प्यार ।।१७३।।

तुम से हैं रिश्ते कई, तुम हो अनुपम यार ।
जब चाहे भाई बनो, कभी पुत्र का प्यार ।।१७४।।

सफ़र-ज़िंदगी में मिले, तुम हो अद्‌भुत यार ।
सच्चे मन इंसान हो, बना रहे यह प्यार ।।१७५।।

देखा सपना साथ ही, शुरू किया व्यापार ।
चलते-चलते बन गये, सुख-दुख भागीदार ।।१७६।।

फल की चिंता हो नहीं, कभी कर्म ना भाय ।
ज्ञान कर्म में लीन हो, महावीर बन जाय ।।१७७।।

लालच ईर्ष्या से बचे, सीमित हो यदि आय ।
दान पुण्य करता रहे, महावीर बन जाय ।।१७८।।

स्त्री का जो आदर करे, संयम गुण अपनाय ।
इन्द्रियां वश में रखे, महावीर बन जाय ।।१७९।।

चोरी का सोचे नहीं, अस्तेय को अपनाय ।
लोभ पराये का नहीं, महावीर बन जाय ।।१८०।।

चले सत्य के मार्ग पे, त्यागे सभी कसाय ।
मिथ्या ना बोले कभी, महावीर बन जाय ।।१८१।।

हार-जीत, सुख-दुख रहे, लाभो-हानि समान ।
भाव रहित जो युद्ध लड़े, मिले पुण्य का मान ।।१८२।।

चले अहिंसा मार्ग पे, कभी न जीव सताय ।
प्रेम करे हर जीव को, महावीर बन जाय ।।१८३।।

बने चित्र सत-रंग से, सात सुरों से गीत ।
ढाई अक्षर प्रेम के, जीवन का संगीत ।।१८४।।

लक्ष्मी, दुर्गा, शारदा, जो हो मन में ध्यान ।
समय भले ही हो कठिन, मन से हम बलवान ।।१८५।।

हुई उपेक्षा हर समय, रही अपेक्षा साथ ।
संयम-मूरत भी तुम ही, बना रहे यह साथ ।।१८६।।

सुख-दुख तो आते रहे, दिया हमेशा साथ ।
कल का है किसको पता, रहे आपका साथ ।।१८७।।

लो मैं आज नहीं रहा, सुन मेरी आवाज़ ।
इस कविता में हैं लिखे, सफल जीव के राज ।।१८८।।

जाने क्या कुछ सोच कर, दिया आपने हाथ ।
सिर्फ़ तमन्ना अब यही, रहे आपका साथ ।।१८९।।

उत्तम वाणी के लिये, सोच उच्चतम होय ।
भाग्य उत्तम चाहिये, बीज तो उत्तम बोय ।।१९०।।

फल मीठा है सब्र का, मन करता ये जाप ।
वश में कर ले सोच को, धीरज मिलता आप ।।१९१।।

साथी ऐसे ढूँढ लो, जिसे कर्म से प्यार ।
धरा हिले या आसमां, माने कभी न हार ।।१९२।।

करो नहीं आलोचना, और न हो आरोप ।
असफलता को फल समझ, व्यक्ति पर मत थोप ।।१९३।।

निश्चय में दृढ़ता रखे, करते सतत प्रयास ।
पथ को वो त्यागे नहीं, लक्ष्य न जब तक पास ।।१९४।।

विनिमय करो विचार का, रोको वाद - विवाद ।
हर हल चर्चा से मिले, तर्क बिगाड़े स्वाद ।।१९५।।

मत सोचो मैं मर गया, सब के दिल में आज ।
मुझे मिले संस्कार जो, बन जाओ हमराज ।।१९६।।

जो वश में रह ना सके, ऐसी जीभ कटार ।
बुद्धिमान संयम करे, करे न बढ़कर वार ।।१९७।।

पागल और फ़क़ीर ये, दोनों एक समान ।
साधक बुद्धि से परे, मूढ़ न बूझे ज्ञान ।।१९८।।

मन अपना सागर सरिस, लहरों सा आवेश ।
करम करोगे मूढ़ सा, शून्य रहेगा शेष ।।१९९।।

निर्देशन आवश्यक है, पथ करना हो पार ।
ऊँचा उठना हो जिसे, नक़्शे में ना सार ।।२००।।

अर्जुन ख़ुद को मानकर, केशव भाव समान ।
गीता को तब जो पढ़े, गूढ़ अर्थ तू जान ।।२०१।।

पानी मित्र बचाइये, पानी सबकी जान ।
पानी उतरे जीव से, मिट जाए पहचान ।।२०२।।

प्रतिभाएँ छुपती नहीं, हो जो सतत प्रयास ।
महिमा सारा जग करे, गौरव होता ख़ास ।।२०३।।

जन्म न बैरी ले कभी, करते हम निर्माण ।
दुश्मन नहीं बनाइये, संकट घिरते प्राण ।।२०४।।

बचपन पे है वश नहीं, छूट हाथ से जाय ।
छीन नहीं मुझसे सके, मुझे बचपना भाय ।।२०५।।

चलना आवश्यक सदा, रखनी है जो आस ।
बैठे तो कुचले गये, पथ हो चाहे ख़ास ।।२०६।।

आशा उत्तम की रखो, जब भी करना काम ।
सर्वनाश के वक्त भी, रखना मन को थाम ।।२०७।।

मम्मी अनपढ़ थीं मेरी, लेकिन समझ अपार ।
प्रेम करो हर जीव से, उनका यही विचार ।।२०८।।

नारी महिमा भूल कर, पग-पग पे अपमान ।
लक्ष्मी दुर्गा शारदा, रूठे यह सब जान ।।२०९।।

सदा अहं को सींचते, बढ़ जाता आकार ।
खेती करिये ज्ञान की, अहंकार बेकार ।।२१०।।

पक्की धुन, मेहनत कड़ी, मिले कई सम्मान ।
अंत काल तक थे रहे, पापी कर्म प्रधान ।।२११।।

ज्ञान बहुत है लोक में, पुस्तक नहीं समाय ।
बाइबिल या कुरान हो, गीता बाँध न पाय ।।२१२।।

अच्छे दिन का लक्ष्य है, काम नहीं आसान ।
बुरे दिनों को रोकना, पहला पग तू मान ।।२१३।।

सन्त सुरक्षा मांगते! युग कैसा यह आय ।
जो भय को ना तज सके, सन्त नही कहलाय ।।२१४।।

पीपल हो या नीम हो, रखना सब का मान ।
अगर हुई नाराज़ माँ, नहीं बचेगी जान ।।२१५।।

व्यक्ति नया जो भी मिले, गुरुजन उसको मान ।
चाह सीखने की अगर, व्यक्ति हरेक महान ।।२१६।।

कचरा बाहर का मिटे, झाड़ू फेरे कोय ।
शुद्धिकरण मन बुद्धि का, स्वच्छ ये भारत होय ।।२१७।।

करम करे निष्काम तो, बन जाती है बात ।
छोड़े ना कर्तव्य को, मेरे घर की बात ।।२१८।।

चलती चर्चा ज्ञान की, नहीं धरम की रात ।
सभी समस्या हल करे, मेरे घर की बात ।।२१९।।

प्रेम रूप कण-कण बसे, प्रिय लगता हर पात ।
बहे प्यार की गंग में, मेरे घर की बात ।।२२०।।

इस शतरंज के खेल में, पैदल हो या ताज ।
अंतकाल जब आय तो, पेटी एक इलाज ।।२२१।।

तम को जो समझा नहीं, ज्योति समझ ना पाय ।
समझे जो अज्ञात को, ज्ञात समझ में आय ।।२२२।।

कितने आये चल दिये, है सबका सम्मान ।
शक्ति हमारी प्रेम है, भारत सदा महान ।।२२३।।

बुद्धि तलक जो ना रुके, करे आत्म पहचान ।
होड़ न पश्चिम की करे, भारत सदा महान ।।२२४।।

जहाँ ज्ञान गंगा बहे, वैश्विक गुरु पहचान ।
वेद और गीता जहाँ, भारत सदा महान ।।२२५।।

सब धर्मों का वास है, यहाँ धर्म सम जान ।
प्रेम धागे से बँधा, भारत सदा महान ।।२२६।।

संख्या का दर्शन दिया, मिली शून्य-पहचान ।
नाप लिया ब्रह्माण्ड को, भारत सदा महान ।।२२७।।

क्षमता बादल की नहीं, बाँधे सूरज डोर ।
दुख की बदरी क्या करे, सुख है चारों ओर ।।२२८।।

राजा हो या रंक हो, गये मोक्ष के धाम ।
समझो हर इक भोर के, जीवन की हो शाम ।।२२९।।

पशु भूखा रहता नहीं, पैसा रखे न पास ।
भरे पेट मनु का नहीं, भरे तिजोरी ख़ास ।।२३०।।

हार, हार पर डाल के, अतिथि का दो प्यार ।
दिन ज़्यादा ठहरे नहीं, जीत बने दीवार ।।२३१।।

बिन माँगे देना नहीं, नमक नसीहत कोय ।
लोग लगाये ज़ख़्म पे, साथ ब्याज के तोय ।।२३२।।

जैसे को तैसा मिले, बैर रहे या प्रीत ।
जो बोये वो ही कटे, जीवन की यह रीत ।।२३३।।

पैसा हो या हो समय, देते रहना दान ।
जीवन में बहते रहे, ये इनकी पहचान ।।२३४।।

अणु हो या परमाणु हो, सब में मेरा वास ।
मुझ में है बसते सभी, मैं ही अणु प्रवास ।।२३५।।

मित्र मन तारक बनें, ज्यों जल तारे नाव ।
कलयुग में दुर्लभ मिले, मिले न छोड़ो पाव ।।२३६।।

विष अमृत का भाग है, मिले साथ ही साथ ।
दोनों का सम्मान कर, लग जाये जब हाथ ।।२३७।।

रोज करे जो प्रार्थना, देता कृपानिधान ।
अपना लालच छोड़ के, औरों पर दे ध्यान ।।२३८।।

इच्छाएं अपनी रखें, लिखकर अपने पास ।
मुहर लगे कानून की, पारदर्शिता खास ।।२३९।।

जीवन की उपलब्धियाँ, घर भी एक मक़ाम ।
रखिये अंतिम साँस तक, बस अपने ही नाम ।।२४०।।

जीवन की इस दौड़ में, ग्राहक सुबहो-शाम ।
अधिक दिया जो आस से, बन जाएगा काम ।।२४१।।

कर्म है अपने हाथ में, फल के देव अनेक ।
फल मिलते उपयोग हो, मालिक सबका एक ।।२४२।।

कर्म सदा करते रहो, मिल जाएगा ठाठ ।।
पापा जाते काम पे, यही फ़र्ज़ का पाठ ।।२४३।।

धर्म स्वयं का जानकर, करो लक्ष्य निर्माण ।
अगर सफलता चाहिये, झोंको अपने प्राण ।।२४४।।

रिश्तों में परिपक्वता, आपस में विश्वास ।
छोटी-छोटी बात को, कभी न डालें घास ।।२४५।।

जीवन की पूंजी बड़ी, रहे मित्र जो ख़ास ।
सच्चे साथी तब बने, अहंकार जब नाश ।।२४६।।

बच्चों को जो नेह दो, नहीं जताओ यार ।
आशा देगी यातना, मिट जाएगा प्यार ।।२४७।।

जीवन में शिक्षा सदा, बच्चों के संस्कार ।
अनुशासन व प्यार का, रहे संतुलन यार ।।२४८।।

भ्रात-बहन रिश्ता सदा, उसका आशीर्वाद ।
लाभ न हानि देखिये, करे न वाद - विवाद ।।२४९।।

सदा समर्पण भाव हो, परिणय माँगे त्याग ।
समझो तुम, बदलो नहीं, मीठा जीवन राग ।।२५०।।

नहीं उतरता ऋण कभी, सेवा करो हज़ार ।
प्रभु समझ माँ-बाप को, भक्ति करो अपार ।।२५१।।

प्रेम जीव का मूल है, माँ से जानी बात ।
प्यार करो हर जीव से, ख़ुशी मिले दिन रात ।।२५२।।

नहीं छोर है सृष्टि का, क्या अपना आकार ।
अहंकार किस बात का, चलो अहं को मार ।।२५३।।

मित्र बने दुश्मन घटे, आये जब मुस्कान ।
हंस कर सबसे बोलिये, रखिये सबका मान ।।२५४।।

लोभ लालच करो नहीं, करो क्रोध का त्याग ।
दुश्मन है ये सब बड़े, घर-घर लगती आग ।।२५५।।

सदुपयोगी है समय, क़ीमत है अनमोल ।
सबके पास समान ये, करिये इसका मोल ।।२५६।।

बीत गया बस में नहीं, नहीं काल का भान ।
वर्तमान जीते चलो, निकले कब ये जान ।।२५७।।

सुख-दुख तो आते रहे, मत घबराना यार ।
आशा कभी न छोड़ना, होती नैय्या पार ।।२५८।।

धन, बल हो या नाम हो, जीवन का यह सार ।
खुशियाँ जीवन में मिले, बाकी सब बेकार ।।२५९।।

जल सेवन नियमित रहे, दिन में बीस गिलास ।
आगत को जल दीजिये, बाकी रहे न प्यास ।।२६०।।

भोजन ज्यादा मत करो, ख़ाली हो कुछ पेट ।
रोज़ा हो उपवास हो, शुद्ध वस्तु हो भेंट ।।२६१।।

रोगरहित काया रहे, पहली है यह बात ।
खेलकूद करते रहो, योग करो दिन-रात ।।२६२।।

साठ बरस का मैं हुआ, पाठ सीख के साठ ।
सोचा तुम से बाँट लू, जीवन की ये गांठ ।।२६३।।

धन, बल, बुद्धि साथ रहे, जीवन में हो शान ।
जीवन साधन हो सरल, मत ईश्वर-सा मान ।।२६४।।

क्षत्रिय का मैं वीर्य लिये, वैश्य रूप धनवान ।
सेवारत मैं शूद्र सा, सूरज मुझको मान ।।२६५।।

गुरु माना हर एक को, ज्ञान मिला चहुँ ओर ।
शिष्य बना जब तक रहा, नहीं ज्ञान का छोर ।।२६६।।

डिग्री बस पहचान है, सब कुछ उसे न मान ।
ज्ञान सूरज की तरह, जन्मों की है शान ।।२६७।।

मौक़ा पढ़ने का मिला, ले ली बाज़ी जीत ।
मेहनतकश है लड़कियाँ, बनी पुस्तकें मीत ।।२६८।।

ना महत्त्व इस बात का, तू कहता क्या बात ।
कैसे और कहाँ कही, तय करती कुछ जात ।।२६९।।

क्रोध अगर है मित्र तो, दुश्मन का क्या काम ।
रिश्ते हो या काम हो, होता काम तमाम ।।२७०।।

शब्द अलग भाषा अलग, भाव भंगिमा एक ।
सुख दुख लगता एक सा, जग में जीव अनेक ।।२७१।।

निर्णायक तुम क्यूँ बनो, ना हो तुम भगवान ।
जो जैसा अपना बने, सब में इक सी जान ।।२७२।।

नग्न सत्य ही है भला, मत करिये श्रृंगार ।
जोड़ घटाना सत्य का, यानी भ्रष्टाचार ।।२७३।।

मौसम में वो दम नहीं, बदल सके जो हाल ।
मुस्कानें चिपकी रहें, काल चले हर चाल ।।२७४।।

तन मन को चंगा करे, नियमित करना योग ।
होय मित्रता योग से, कभी न लागे रोग ।।२७५।।

सपने सच होंगे तभी, पाएँगे वो जान ।
भय को डालो क़ब्र में, राह बने आसान ।।२७६।।

रहे खड़े तूफ़ान में, टूटोगे तुम यार ।
उड़ जाओगे साथ यदि, घट जाएगा भार ।।२७७।।

पूजा ऐसी मत करो, भय व लोभ हो साथ ।
परहित ही मन में रहे, जोड़ प्रभु को हाथ ।।२७८।।

सफल रहे हर काम में, मन में रहता जोश ।
बल के साथ दबाव में, मिट जाते हैं होश ।।२७९।।

करे इश्क़ जो देह से, जाय देह के साथ ।
मन से मन का इश्क़ हो, सदा हाथ में हाथ ।।२८०।।

तमगे मारे कोख में, हमने कई हज़ार ।
मित्र बचा लो बेटियाँ, सिंधु साक्षी झंकार ।।२८१।।

हाथी सूअर से लड़े, हाथी का अपमान ।
कूटनीति तो यह कहे, चल तू सीना तान ।।२८२।।

रहे अस्त या हो उदय, कौन सका पहचान ।
धरती के हैं ये जनक, अलग-अलग पहचान ।।२८३।।

गुल होती कड़वाहटें, हो जाती जब प्रीत ।
सकल भूल को भूलकर, बन जाओ मनमीत ।।२८४।।

भूख मिटे या ना मिटे, करना नहीं बखान ।
जीना ऐसा सीख लो, देश पे हो क़ुर्बान ।।२८५।।

काला कभी न राखिए, तन मन धन का पाथ ।
दुख देगा इस लोक में, दे परलोक न साथ ।।२८६।।

परेशान है आम-जन, फिर भी है तैयार ।
ना कोई भी बच सके, इंतज़ार में सार ।।२८७।।

बूँद जानती है सदा, सागर मेरा धाम ।
कोशिश वो करती रहे, आवे जग के काम ।।२८८।।

है मालूम पतंग को, कटना है हर हाल ।
छूना चाहे आसमाँ, डोरी संग है चाल ।।२८९।।

पेड़ जानता है सदा, फल ना मेरा पान ।
मगर ताज़गी के लिये, देता अपनी जान ।।२९०।।

रिश्तों की क्या पूछिये, दिल की है वो जान ।
उनके बिन मिलती नहीं, मानव की पहचान ।।२९१।।

कृतज्ञता की भावना, हर पल रखिये ध्यान ।
धन्यवाद करते रहें, बढ़ता है सम्मान ।।२९२।।

भिन्न - भिन्न है पत्तियाँ, भाँति - भाँति के फूल ।
चौरासी लख योनियाँ, भिन्न वृत्तियाँ मूल ।।२९३।।

जल तो बहती धार है, स्वच्छ हो अपने आप ।
दूषित करना छोड़ दे, नहीं लगेगा पाप ।।२९४।।

सोच समझ कर देख लूँ, मंथन हो आधार ।
कलमबद्ध से पूर्व ही, चिंतन बारम्बार ।।२९५।।

आँखें चमके प्यार से, होंठों पे मुस्कान ।
जीवन में ख़ुशियाँ रहे, रिश्तों में हो शान ।।२९६।।

महापुरुष का साथ हो, जीवन में हो आस ।
कमल पत्र पे बूँद ज्यों, मोती का आभास ।।२९७।।

माँगे से मिलती नहीं, ना ही बढ़ती शान ।
काम अनोखा कीजिये, बने वही पहचान ।।२९८।।

धर्मनिष्ठ पत्नी मिली, भाई - बहन संसार ।
प्राची और प्रतीक से, जीवन का उद्धार ।।२९९।।

फल पक जाए फिर गिरे, सबसे उत्तम होय ।
फल को भी पीड़ा नहीं, ना डंठल ही रोय ।।३००।।

सुख चाहो तो सुख मिले, दुख चाहो संताप ।
जैसी जिसकी कामना, ईश्वर का परताप ।।३०१।।

उद्यम कर, सिद्धी मिले, मात्र चाह ना पाय ।
मृग जाये ना सिंह-मुख, कर्म करे फल भाय ।।३०२।।

जूठा खाना छोड़ना, भोजन का अपमान ।
थाली धोकर पीजिये, ईश्वर का सम्मान ।।३०३।।

क्षय नहीं होता कभी, लो अक्षर का ज्ञान ।
पढ़ लिख कर बढ़ती समझ, जीवन की पहचान ।।३०४।।

ख़ुशियाँ बाँटे से बढ़े, दुख बाँटे कम होय ।
इस जीवन में फल मिले, बीज जिस तरह बोय ।।३०५।।

अपना धर्म निभाइये, सकल गर्व के साथ ।
प्रेम कर्म का मेल हो, मिले प्रभु का हाथ ।।३०६।।

मधुर रहे बोली अगर, मन में हो ईमान ।
जग जन सब वश में रहे, मिलता है सम्मान ।।३०७।।

हिंदी भाषा है गहन, शब्द - शब्द विज्ञान ।
संस्कृत की अनुजा यही, छुपा है गहरा ज्ञान ।।३०८।।

भाव सदा आसक्ति का, सकल दुखों का मूल ।
चाहत हो जो मुक्ति की, बदलो इसे समूल ।।३०९।।

अंधकार चहुँ ओर है, ज्ञानी करे प्रकाश ।
पढ़ा-लिखा ही गिर पड़े, सकल समाज विनाश ।।३१०।।

देखे जब हर साँस को, चेतन मन हो ध्यान ।
शांत चित्त तन-मन भये, जीवन बने महान ।।३११।।

पितृ गये सब मोक्ष को, कर अपने सब काम ।
हम उलझे अब काम में, जीवन ना आराम ।।३१२।।

ज्ञानी ऐसा जीव है, जो जैसा है मान ।
चार तरह के जीव ये, करे जगत उत्थान ।।३१३।।

जोड़ - घटाने में रहे, वो गणितज्ञ कमाल ।
हर पल करता हो नया, कलाकार की ताल ।।३१४।।

चार लोग से जग बना, जाने विधिवत चार ।
करता अणु की खोज जो, बने ऋषि संसार ।।३१५।।

तत्व वही है जान ले, है उपयोग हज़ार ।
दिखे न महिमा तत्व की, दिखता महज़ प्रसार ।।३१६।।

जो हो ख़ुशबू आप में, फैलेगी चहुँ ओर ।
धर्म - कर्म प्रेरित करें, नहीं ख्याति का छोर ।।३१७।।

पलकों में आँसू बसे, निर्मल जल का वास ।
जैसी मन की भावना, आँसू केवल खरे ।।३१८।।

काग बिना कोयल नहीं, हर पक्षी का मान ।
भला-बुरा अपनाइये, कर गहरी पहचान ।।३१९।।

गंगा को माता कहा, सागर पिता समान ।
मैला जो उनको करें, हो कपूत संतान ।।३२०।।

सेवा के प्रतिबिम्ब है, मानवता अवतार ।
छंदबद्ध सब को नमन, प्यार करें स्वीकार ।।३२१।।

धरम - युद्ध से जूझते, रंक रहे या शाह ।
साम दाम व दंड भेद, कृष्णार्जुन की राह ।।३२२।।

अर्थ हीन, स्व-अर्थ जहाँ, परम-अर्थ भरमाय ।
स्व अर्थ बिन व्यर्थ सब, अर्थ अनर्थ सहाय ।।३२३।।

उगता सूरज देखिए, फिर ना आँख मिलाय ।
बाल्यावस्था साथ हो, शिखर चढ़े खो जाय ।।३२४।।

जीवन जीने की कला, इक सूरज समझाय ।
दिन भर जो बाँटे चमक, रात चाँद चमकाय ।।३२५।।

कविता लेखन का नशा, फिर क्यूँ चखे शराब ।
ख़्यालों में हर पल रहें, छलके छंद शबाब ।।३२६।।

अहंकार मन में रहे, नहीं दया का भाव ।
अहं समंदर को रहे, बहे न काग़ज़ नाव ।।३२७।।

पार्थ तू माटी नहीं, ना तन अपना मान ।
जड़ में फूंके जान जो, वो शक्ति वही पहचान ।।३२८।।

माटी माँ का रूप है, बीज पिता का मान ।
दोनों के आशीष से, जीव चढ़े परवान ।।३२९।।

बाढ़ जो आये यहाँ, सरवर का क्या काम ।
परम ब्रह्म का बोध हो, नहीं वेद का नाम ।।३३०।।

फल पर तेरा वश नहीं, कर्मों पर अधिकार ।
फल की आशा हो नहीं, ना अकर्म आचार ।।३३१।।

मोह जाल के जंगल से, बुद्धि लगेगी पार ।
यात्राएँ सन्यास की, सुना हुईं बेकार ।।३३२।।

जो भौतिक चिंतन करे, आसक्ति हिय होय ।
राग जगाती कामना, काम क्रोध को बोय ।।३३३।।

क्रोध मोह को जन्म दे, चेतन मारा जाय ।
चित्त नाश बुद्धि हरता, पौरुष ही गिर जाय ।।३३४।।

जीना मरना तय सदा, सतत लोक परलोक ।
बच पाना संभव नहीं, अनुचित तेरा शोक ।।३३५।।

नाश न कोई कर सके, व्यापक जो चहुँ ओर ।
अविनाशी यह आत्मा, चले न जिस पर ज़ोर ।।३३६।।

हाइकु-ताँका

'हाइकु' अब किसी प्रकार अपरिचित विधा नहीं रह गयी है। 'हाइकु' जापानी पद्य शैली की एक अक्षरिक छन्द प्रणाली है, जो त्रिपदी, सारगर्भित, गुणात्मक, गरिमायुक्त, विराट सत्य की सांकेतिक अभिव्यक्ति है जिसमें बिम्ब स्पष्ट हो एवं ध्वन्यात्मकता, अनाभूत्यात्मकता, लयात्मकता आदि काव्यगुणों के साथ-साथ संप्रेषणीयता पूर्ण काव्य रचना है। यह आशु कविता भी मानी जा सकती है। यह एक चरम क्षण की कविता है जिसमें काव्य के सभी गुणों की अपेक्षा की जा सकती है। हिन्दी हाइकु की पृष्ठभूमि निःसंदेह जापानी काव्य से जुड़ी है। जापानी काव्य की पृष्ठभूमि की चर्चा करें तो सर्वप्रथम चतुर्थ शताब्दी से लेकर आठवीं शताब्दी तक की जापानी काव्य रचनाओं का प्रथम संकलन 'मान्योशू' में प्राप्त होता है। बाशो पूर्व की हाइकु कविताएँ 'हाइकु' के नाम से नहीं बल्कि 'होक्कु' के नाम से जानी जाती थी जो ताँका की प्रारंभिक तीन पंक्तियाँ होती हैं। इस 'हाइकु' विधा को काव्य विधा के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान करने वाले कवि 'मात्सुओ बाशो' ही है। 'हाइकु' अब विश्व कविता बन चुकी है। इसकी लोकप्रियता दिनों दिन बढ़ती चली जा रही है। हाइकु काव्य सृजन व प्रकाशन एक आंदोलन बन चुका है।

(हाइकु की सुगंध से साभार)

- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक 'हाइकु मंजूषा'

जो आप देंगे
उधार हैं मुझ पे
वापस दूँगी

क्षमा याचना
विनती है आपसे
क्षमा बाँटना

जब सुख में
याद करें मुझको
दुख हो ही क्यों

कमियाँ हैं सौ
अपने आप को चाहूँ
तुझे क्यूँ नही

ख़ामोशी भली
तुम्हारी कटुता से
आहत हूँ मैं

चाह है मुझे
रिश्ता निभ जायेगा
तुम जो चाहो

भू, जल, आग
पवन न आकाश
तू तत्व नहीं

मेरा अमृत
मिटा नहीं सकता
तेरे विष को

खोद ले मुझे
इंतज़ार करना
गाडूँगी तुझे

अज्ञानता है
व्यर्थ कुछ भी नहीं
ज्ञान को बढ़ा

पसंद मुझे,
बारिश में भीगना
बड़ा क्यूँ हुआ

अपना लिया
छू कर मन मेरा
कहाँ थी तुम

तू भी हैं ख़ुश
संयोग हुआ ऐसा
मैं भी हूँ ख़ुश

देने के लिये
जियो सारी ज़िंदगी
लेते सब हैं

बनो चुम्बक
मंत्रमुग्ध हो जाए
दुनिया सारी

अब से तुम
जियो अपनी तरह
मैं तो जी लूँगा

आइना हूँ मैं
ख़ुद को ही पाओगी
जब देखोगी

आग को देखा
उसकी तपन में
तुम को पाया

फूलों को देखा
नशीली महक में
तुम को पाया

चाँद को देखा
शीतल चाँदनी में
तुम को पाया

पानी में देखा
अपने चेहरे में
तुम को पाया

ना मैं हूँ खुदा
इंसान बन जाए
ना तू है खुदा

पन्ने लिखे जो
पसीने की स्याही से
वो सिकंदर

ख़ुदगर्ज हूँ
भला कर ना सका
बुरा भी नहीं

न जन्म कुछ
आँख का झपकना
ना मृत्यु कुछ

जी हर पल
ये आँख क्यूँ हो नम
कल हो ना हो

भटक नहीं
पथ कर्म अडिग
है कर्म योग

वार्तालाप हो
कभी भी आपस में
हाइकु में हो

बातों मे सार
हाइकु का प्रचार
बढ़ता प्यार

ना मेरा वक़्त
किसी का सगा नहीं
ना तेरा वक़्त

नशा कोई भी
तकलीफ़ करेगा
हो किसी को भी

जो हम में है
वो बात ना तुम में
ना मुझ में है

ईश्वर तू है
सबके भीतर में
हर में तू है

देखो नीयत
आत्मा के आइने में
हो ख़ैरियत

मजबूत थी
डोर कच्चे धागे की
मोहब्बत थी

प्रेरणा आप
मेरे आदर्श रहे
अनंत काल

चाँद ओझल
आशा भरी किरणें
सूर्य निकला

माँ का आशीष
हमेशा है हाज़िर
ना कोई फ़ीस

प्रातः नमन
जीवन में सुमन
खिले आपके

सुख-दुख में
आप सबका साथ
धूप-छाँव मे

आत्मा अटल
जन्म मृत्यु से परे
कभी ना मरे

सुख व दुख
सिक्के के दो पहलू
भाग्य अपना

संभाल लूँ मैं
सामने करे वार
पीठ छलनी

कर्मो का हल
सफल या विफल
चलते रहो

ना उड़े कभी
पहुँचे लक्ष्य तक
प्राण पखेरु

आज का प्रण
सम्मान स्नेह प्रेम
स्त्री को अर्पण

बुद्ध शरण
दलितों का उद्धार
भीम चरण

हम है हम
कैसा है ये वहम
मेरा अहम

पत्थर पूजे
उसमें प्राण फूंके
क्यों हो पत्थर

सक्षम जिसे
प्रकृति ले परीक्षा
ये ही जीवन

है सर्वभौम
प्रेम ज्ञान व कर्म
है मूलमंत्र

कोख में जानी
अपनी पहचान
माँ तू महान

सूर्योदय है
देखने का भ्रम है
सूर्यास्त भी है

कम कमाना
निरंतर कमाना
यश कमाना

भटके सब
फिर गुरु है कौन
असमंजस

बादल चीर
थोड़ा है इंतज़ार
निकले नीर

उच्च विचार
उत्तम हो उच्चार
शुभ आचार

सुनो चीत्कार
रोये है ये धरती
मानव जाग

मन ही गुरु
जलाओ ऐसी ज्योत
केवल ज्ञान

है हर वक़्त
प्रतिक्षा भविष्य की
आज भी जी लो

प्रेम करुणा
परम्परा हमारी
भक्ति अहिंसा

दूध है हम
जो आये घुल जाये
शक्कर तुम

अष्टांग योग
यम से समाधी का
करे प्रयोग

छत टपके
किसान हाथ जोड़े
बरसो प्रभु

आई विपदा
वर्षा आँसू का पर्दा
लो दुख छुप

पेट में बंदा
चेहरा भी ना देखा
माँ प्रेम अंधा

आँख का पानी
गिरने मत देना
आँखो से पानी

जो दिल में हैं
आँखो मे तू क्यूँ झाँके
जुंबा पे भी है

आँखो में देखूँ
डर ख़ुद डरता
डर मरता

जन्नत क्यों
गुनहगार सब
बता ए रब

ज़र्रा या इंसा
खुदा की है नेमत
ख़फ़ा हो मत

तन या मन
चिकित्सक नमन
स्वस्थ करते

सेवा कर्तव्य
डाक्टर हो या सीए
किया किजिए

जड़ की छोड़ो
नींव की कौन सोचे
माँ भी भुला दे

खुदा के बंदे
आसान है डगर
खुदा से डर

शक्ति है एक
चलाती है सबको
नाम अनेक

समय चक्र
अभिमान न कर
भाग्य का खेल

सूरज जैसे
कैसे बनाये रखूँ
अतिउत्साह

बूँदों की लय
जब बीज से मिले
अंकुर फूटे

आएगी आँधी
विचारों का मंथन
इंतज़ार है

समन्वय है
चुप्पी और आँखों में
दिल समझे

उत्साह सदा
उदासी यदा-कदा
ख़ुशियाँ ज़्यादा

क्षितिज भ्रम
नभ से घिरी धरा
बाँहों में भरा

काम ही काम
कमाल के कलाम
तुम्हें सलाम

गुरु जला दे
ज्ञान मय दीपक
अज्ञान भागे

गूगल गुरु
अलादीन चिराग़
हर जवाब

मौन का अर्थ
जानेंगे जब हम
शब्द हों व्यर्थ

रक्षा का वादा
कच्चा धागा जो बांधा
प्रेम बंधन

बप्पा मोरिया
स्वागत है आपका
लवकर या

बाप्पा मोर्या रे
हर घर पधारे
ख़ुशियाँ भरे

रचनाएँ है
चाय की चुस्कियाँ है
और क्या चाहूँ

ज्ञान गंगा है
अजर अमर है
अविनाशी है

हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ
जैसा तुम समझो
ना ना ना ना ना

प्यार नहीं है
रिस-रिस के चले
ये कैसे रिश्ते

साल जाने दो
छोड़ो ना कभी साथ
थाम लो हाथ

मैं ही मैं बसा
मैं में शहर फँसा
गाँव में मैं था

प्रेम का रस
जब डालो सेवा में
सब सरस

स्वस्थ रहना
नैसर्गिक सौंदर्य
तन व मन

है बीती रात
जन्मी ढेर आशायें
हो सुप्रभात

नमन करूँ
तन मन चेतना
समर्पित हूँ

मन में सूर्य
हमेशा हो दर्शन
हर्षित मन

नया सवेरा
हो रोज नई आशा
भागे निराशा

ख़ुशी आसान
हो दूसरों से ज़्यादा
यह मुश्किल

सागर बनो
लहरें रहे अशांत
है ख़ुद शांत

दे प्राण सूर्य
ये सब है देवता
दे जल चंद्र

अंधेरा नष्ट
चुनाव है अपना
श्रेष्ठ या भ्रष्ट

सूरज पिता
चंदा मामा, भू माता
सह कुटुंब

है धन्यवाद
जो अब तक मिला
या नहीं मिला

हो मितभोगी
मितभाषी मितवा
मीत वो योगी

बुद्ध चमके
महावीर चमके
सोना भी फीका

मानव कर्म
है बादल भ्रमित
हुआ अहित

अपना राग
अपनी डफ़ली है
अपना ढोल

सितारा मैं भी
ईर्ष्या क्यों करनी
सितारा तू भी

सबकी सुनो
आप मन की करो
दिल की सुनो

प्रज्ञासूर्य है
प्रकाश ही प्रकाश
नये बुद्ध हैं

हो सब काम
आदर्श के प्रतीक
मन में राम

सागर जल
सारा विष पीजाये
अमृत फल

झरना जल
नयन लुभावन
सबका मन

नाली का जल
गंदगी अपना ले
सुंदर कल

कुएँ का जल
सब गाँव बसाये
समाज पाये

ताल का जल
सब प्यास बुझाये
सुधारे कल

नदी का जल
सतत है बहता
भाग्य बनाता

गंगोत्री जल
स्वच्छ और निर्मल
जीव सफल

ज्ञान बहता
जैसे जल की धारा
प्रेम हमारा

न टप-टप
कहाँ खो गये तुम
न कल-कल

है विलासिता
हो साप्ताहिक स्नान
पीते हैं आँसू

चहचहाना
मै भाषा नहीं जाना
प्यास या ख़ुशी

अपवित्रता
धरती पे दमन
सूर्य अगन

करो प्रार्थना
मिटे ग़ैर वेदना
हर सुबह

मैं हूँ भ्रमित
चलूँ सूर्य की चाल
या जल धार

माँ वसुंधरा
सदा रहेगी साथ
नतमस्तक

अमर नहीं
भाषा भी होती बूढ़ी
विचार वही

हरे का मूल्य
पतझड़ में छुपा
खोजने चला

पिता प्रेरणा
कर्मठता का पाठ
मिलता है ठाठ

रिश्ते है पानी
तारे मन का तार
शुद्ध हो प्यार

बीज से फल
जिया मरा व जिया
जीव सफल

प्रभु सिखा दे
मुझे सबकी वाणी
दर्द तो बाँटू

चिड़ी या चिड़ा
चहचहाहट है
भोर मीठी है

नहीं दिखते
मछली जब रोये
जल में आँसू

अमरीकन
खोया अपनापन
सब अकेले

समझूँ नहीं
पक्षी का दुख दर्द
पंख फैलाये

कहीं है रवि
धरती का आनन्द
कहीं है चाँद

नहीं जानता
पेड़ का कराहना
फल जो टूटे

है रात गई
नई किरण आस
है बात गई

है विडम्बना
थी विद्या की जननी
हूँ सरस्वती

है विडम्बना
थी वैभव की रानी
हूँ सिर्फ़ लक्ष्मी

तुम में स्वर्ग
ना भागो, मत बनो
कस्तूरी मृग

हरसिंगार
रंग रूप खूशबू
सबका प्यार

हो असंभव
जब प्रयत्न नहीं
सब संभव

हो मनमानी
नेता जब अज्ञानी
जनता भोगे

रावण हारा
अहंकार भस्म हो
जीत राम की

रावण हारा
मानवता समझे
जीत राम की

रावण हारा
अन्याय करे नहीं
जीत राम की

रावण हारा
स्वार्थ समझे नही
जीत राम की

रावण हारा
जले चिता ईर्ष्या की
जीत राम की

रावण हारा
दफन घमंड हो
जीत राम की

रावण हारा
लोभ का नाम नही
जीत राम की

रावण हारा
मोह जब रहे ना
जीत राम की

रावण हारा
विनाश हो क्रोध का
जीत राम की

रावण हारा
मिटे जब वासना
जीत राम की

ज्ञान उड़ान
आत्मा से परमात्मा
मोक्ष की ओर

बहती रहूँ
मस्त हूँ मद नहीं
लक्ष्य अटल

ज्ञान दिवस
ये बसंत पंचमी
आओ मनाये।

होली आई रे
बरसे प्रेम रंग
मीठा बोलो रे।

है विडम्बना
बहती सीधी मीठी
मंज़िल खारी

मैं जग बिन्दु
है शून्य चारों ओर
अहं ब्रह्मास्मी

म्यान न देख
तलवार परख
ज्ञान जनक

विषय भोग
है विष की तरह
बंधन बड़ा

ताँका

ज़माना बीता
ना लाईट ना पंखा
खुले घरों में
हुए क़ैद काँच में
सीमेंट की डिब्बियाँ

मिलती नहीं
है हरदम साथ
हमारी आँख
बँटे है दो में हम
एक का अहसास

कवि उदास
शब्द रहे अधूरे
भाव गहरे
जाने कौन समझे
जाने क्या-क्या समझे

मैं रंगरेज
मैं ही हूँ चुनरिया
रंग भी हूँ मैं
रंगूँ मेरे रंग में
मैं जग, जग में मैं

है विडम्बना
थी शक्ति की मूरत
हूँ सिर्फ़ दुर्गा
है बचा बस नाम
केवल कोहराम

मानव ठाने
कुछ ना असंभव
प्रभु भी माने
हो सतत प्रयत्न
मिलते ही है रत्न

हो काला टीका
लगती नहीं नज़र
माता का प्यार
बन जाते हैं पिता
सब बच्चों के यार

काला जीवन
पुस्तक चमकायें
व्यक्तित्व महके
ज्ञान बढ़े जो पढ़े
तब आत्मा दमके

फल हो मीठा
अनुभव की बात
पेड़ पुराना
बड़ो का नहीं मान
आया नया ज़माना

खो गया हरा
चारों ओर है काला
मन या धुआँ
पानी हुआ दूषित
नदी नाला या कुआँ

मै जो हूँ ख़ुश
दुनिया भी हो ख़ुश
खूशबू फैले
छूत की है बीमारी
जो बाँटो वो ही फैले

जो देखूँ दिखे
रावण हो या राम
मन का काम
मैं जैसा सब वैसे
मैं रावण मैं राम

बुद्ध का पथ
चले ज्ञान का रथ
हो तथागत
भूल जाना विगत
बने करुणा पथ

विरोध छोड़ो
अवरोध हो दूर
जीना सहज
काँटे न बनो तुम
फूल न बन पाओ

जहाँ भी देखा.
हर कण-कण में
तुम को पाया
प्रभु तेरी है माया
बनूँ तेरा ही साया

ऐसा कीजिए
दुनिया याद करे
जाने के बाद
छाप छोड़ो कर्म की
रहे धर्म का स्वाद

पत्थर दिल
समझें मुझे सब
ऐसा ही हूँ मैं
पिघलता है दिल
लावा ना बन पाता

इतना उठो
कुर्सी रहे ना रहे
ऊंचाई रहे
ऊँचे घर न बने
दिल में बस जाओ

सुने कोई तो
खामोशी की आवाज़
वक्त है किसे
मन के तार जुड़े
शब्द भी कम पड़े

जियो ऐसे भी
पर्दा गिरे तो भी
तालियाँ रहे
काम कर लो ऐसे
पुश्तें भी याद करे

अहं आकार,
मिटा नहीं पाया
जीना बेकार
रंक मिले राजा से
कृष्ण सुदामा प्यार

ठोकर खाई
तोहमत मत दो
बढ़ते चलो
कोई नहीं ज़िम्मेदार
तेरी ही जीत-हार

अंधेरे में था
गुरुदेव नमन
दिन दिखाया
अज्ञान भी मिटाया
प्रभु से मिलवाया

इस घर में
सब एक हैं पर
भाग्य अलग
एक ही संरचना
है अलग अलग

मिट जाएगा
सारा अर्जित मान
क्रोध ना कर
खो जाए पहचान
क्रोध मिटा दे शान

सकारात्मक
सोच और शब्द
ऊँचा उठा दे
विवाद न उलझे
बिगड़ा भी सुलझे

क़दम उठे
जब सही दिशा में
मंज़िल मिलें
हो भ्रमित जो दिशा
असफलता ही मिले

पतझड़ से
मिलन हो आसान
भू व सूरज
है आलिंगनबद्ध
जग नवनिर्माण

प्यार मुश्किल
नफरत आसान
मान न मान
प्यार माँगता त्याग
नफरत यानि आग

जीव चींटी भी
आत्मा एक समान
धर्म अहिंसा
यही जीवन सार
धर्म का ये आधार

पर्यावरण
गंभीर है समस्या
रोक चरण
वरना बरबादी
समय की मुनादी

हाइकु ताँका
ये कही अनकही
हर कविता
मेरे मन की बात
यही मेरे जज़्बात

कविताएँ

कविता अज्ञात की यात्रा है और वही इसका सब कुछ है। कविता रेडियम की खदान की तरह है जिसमें एक ग्राम के लिए एक साल लगता है केवल एक शब्द के लिए हज़ारों टन शब्द खनिज फैलाना पड़ता है।

अभिमन्यु 'अनत' (मॉरीशस) जिस यात्रा का उल्लेख करते हैं, उसकी अंतर्यात्रा विविध पड़ावों से होकर अनुभूतियों को कविता तक पहुँचाती है। जीवन जगत की अश्रुत ध्वनियों को लपक लेती है। बनाती है मिश्रित रंगों का कोलाज। तीसरी आँख से अभिमंत्रित स्वरों को मर्म तक ले चलती है।

कविता कोश में 'सायास' शब्द नहीं होता। मन की शान्त झील में विद्युत आवेशित क्षण तरंगे उठाते हैं। जल काँपता है। जल में उतरा हुआ आसमान लरजता है। कम्पन में निहित सौंदर्य कविता में साकार होता है।

(गीली माटी से साभार)

- इंदिरा किसलय
(लेखिका/कवयित्री)
मो. ९३७१०२३६२५

वो गुजरा ज़माना!

बहुत याद आता है, वो गुज़रा ज़माना

कंचे की गोलियाँ, गिल्ली को गुमाना
पतंग की डोरियाँ, काटना कटवाना
अम्मा की लोरियाँ, छत पर सो जाना
बहुत याद आता, वो गुज़रा ज़माना

पापा की मार, मम्मी का खाना
टीचर की थप्पड़, दोस्तों में खो जाना
स्कूल के नाम पर थियेटर चले जाना
बहुत याद आता, वो गुज़रा ज़माना

बहनों से झगड़ा, भाई को सताना
आमरस से रोटी, मिठाई चुराना
होम वर्क न करना, ना पढ़ना पढ़ाना
बहुत याद आता, वो गुज़रा ज़माना

बहुत याद आता है, वो गुज़रा ज़माना

कौन कहता?

कौन कहता
फ़र्क़ नहीं पड़ता!
खो गई गलियाँ बचपन की
कंचो की और
गेंद रबड़ की
वो गंदी नालियाँ
यारों की गालियाँ
कभी पतंग की डोर
कभी पुलिस चोर
ना फ्यूचर की चिंता
ना लगता कभी बोर
कौन कहता
फ़र्क़ नहीं पड़ता !

पढ़ने में मन नहीं लगना
हर पल हो खेलना
मम्मी की डाँट
और पापा की मार
और उसमें छुपा
ढेर सारा प्यार
माँ का पीछे-पीछे भागना
पास होने की नहीं संभावना
भाई बहन को सताना

बीत गया वो ज़माना
कौन कहता
फ़र्क़ नही पड़ता !

आने लगी समझ थोड़ी
नहीं पढ़े तो समस्या बड़ी
मिलेगी नही नौकरी
चढ़ ना पायेंगे घोड़ी
छोड़े खेल, की पढ़ाई
कभी छत पर कभी रज़ाई
छूटा बचपन राते काली
ना होली ना दीवाली
कभी दोस्तों के घर
होती चाय की प्याली
कौन कहता
फ़र्क़ नही पड़ता !

छूटे दोस्त छूटी पढ़ाई
कालेज भी छूटा
नौकरी पाई
नया काम नये साथी
काम लगे जैसे हाथी
खाता बही क़लम दवात
आंकड़ो की बात

केसियो का साथ
घर वाले कहे
थाम ले हाथ
कौन कहता
फ़र्क़ नही पड़ता !

जानेमन मिली
ज़िंदगी चली
बेटा मिला
बेटी मिली
स्कूटर पर चार
सिनेमा घर से प्यार
कभी हल्दीराम
कभी सब्ज़ी की दुकान
कभी पत्नी से झिक झिक
कभी बच्चों की पिकनिक
यादें रह गई
मस्ती छूट गई
कौन कहता
फ़र्क़ नही पड़ता !

अंतिम लक्ष्य !

मन
कभी बूढ़ा क्यों नही होता
तमन्नायें
खामोश क्यों नही होती
तेल ख़त्म होने को है
तन-दीपक का
फिर भी इच्छायें
क्यों नही मरती
ढूँढता हूँ जवाब
इन सवालों का
बुद्धि हार जाती है
मन के आगे
मानो
ग़ुब्बारे सा हो गया हूँ
एक तरफ़ दबाता हूँ
दूसरी तरफ़
फूल जाता हूँ
कब अंत होगा
अनगिनत इच्छाओं का
शायद
चिता ही
अंतिम लक्ष्य हो।

आत्म चिंतन

ना पद चाहूँ
ना पदक
ना चाहूँ
मान सम्मान।
ना सुख में कोई
सुख मिले,
ना दुख में
पीड़ा भान।
राग किसी से
रखूँ नहीं,
द्वेष का
न हो नाम।
चित्र पटल
चलता रहे,
हो अंतर्मन
में ध्यान।
हो विलय
मैं की महिमा,
मिले आत्म
अमृत ज्ञान।।

मेरी कीमत

मैं वो
हीरा हूँ
जिसे अक्सर
पत्थर समझ के
ठुकरा देते हैं लोग,
जब खाते है
ठोकरें ज़माने की
मेरी क़ीमत
समझते हैं लोग।

गालों की लाली
घटाएँ ये काली
होंठ मधु की प्याली
मदहोश कर देते है
तन को
मन को
सारे जीवन को।

कहाँ खो गई !

कहाँ खो गईं तुम
जन्म दिया
कार्तिकेय और
गणेश को
मार दिया
महिषासुर को
शक्ति की
प्रतीक तुम
हे दुर्गा
इस युग में
कहाँ खो गई तुम।

पद्मा कमला
या चंचला
अनेक नामों से
जाना तुझे
पूजा करता
हर कोई ...
रावण ने भी
माना तुझे
तेरे बिना
निर्धन सभी

हर कोई चाहे
पाना तुझे
विष्णु की
पत्नी बनी
हे लक्ष्मी
इस युग में
कहाँ खो गई तुम।

सब वेदों की
जननी तुम
कला संगीत को
धारण किया
ज्ञान गंगा
तुमसे निकली
ब्रह्मा जी का
वरण किया
हे सरस्वती
इस युग में
कहाँ खो गई तुम।

विजयालक्ष्मी पंडित हो
या हो
सावित्री फुले
किट्टुर हो या
कमला देवी
सुचेता कृपलानी
कैसे भूलें
मत भूलो
अपनी गरिमा
चाहे यह युग बदले
क़लम उठाकर
जता दिया है
तुमसे न कोई है पहले
दबने मत दो
अपने मान को
तुम हो नही
अबला नारी
हे जगत जननी
इस युग में
कहाँ खो गई तुम।

जिंदगी दौड़ रही...

क्यूँ लगता है मुझे
कि ज़िंदगी दौड़ रही हैं
कल ही की तो बात है
एक नन्हा सा अंश
हमारी ख़ुशियाँ बनकर
प्राची की गोद में आया
कैलेंडर कहता है
भ्रम में मत रह
पाँच साल हो गये
क्यूँ लगता है मुझे
कि ज़िंदगी दौड़ रही हैं।

बच्चों का विवाह
एक बड़ी ज़िम्मेदारी
सालों की योजना
वर्षों की उमंग
उमड़ता उत्साह
परिवार के संग
और उसके बाद
पंछी उड़ गये
हर दिन इंतज़ार
तरसता प्यार
आठ साल गुज़र गये

क्यूँ लगता है मुझे
कि ज़िंदगी दौड़ रही हैं।

पापा का प्यार
जैसे वृक्ष की छाया
ज़िद में आकर
मुझे सी.ए. बनाया
त्यागा हर सुख
हमारे सुख के लिये
बस यही संतोष
अंत समय में
कुछ वर्ष साथ
गुज़ार पाये
समाज के काम में
जीवन लगाये
चल दिये छोड़ कर
मोक्ष की ओर
क्यूँ लगता है मुझे
कि ज़िंदगी दौड़ रही है।

कुछ पढ़ नहीं पाई
पर समझ
हर बात की

कोई दुख
हिला न पाया
जितना था
जैसा भी था
काम चलाया
ग़लत बात
न की
न करने दी
न कभी अनुमोदन किया
न लोभ
न लालच
न द्वेष
न ईर्ष्या
मेरी बाईजी (माँ)
बड़ी अनोखी
हम सबको
चलना सिखाया
आज लाठी का
सहारा
क्यूँ लगता है मुझे
कि ज़िंदगी दौड़ रही है।

सब कुछ छोड़
मेरे घर आई
और सबको
अपना बनाया
ज़िम्मेदारी को
ख़ूब निभाया
जाने कहा
खो गई हँसी
मैं कुछ खास
हँसा न पाया
क्यूँ लगता है मुझे
कि ज़िंदगी दौड़ रही है।

आपाधापी
भाग-दौड़ में
गुज़र गई
जाने जिंदगी कहाँ
फिसल गई
दाँत थे तो
चनें नहीं
अब चनें है तो
दाँत नहीं
क्यूँ लगता है मुझे
कि ज़िंदगी दौड़ रही है।

कभी-कभी

थक जाता हूँ कभी कभी
सबको मनाते-मनाते
समझ नहीं पाता क्या दूँ और
समय, साधन तन या मन
कुछ भी तो नहीं रखता
किसी से छुपा के।
थक जाता हूँ कभी कभी
नाटक करते-करते।
अहंकार मेरा मित्र नहीं
लेकिन छोड़ नहीं पाता
अपना स्वाभिमान,
चाहता हूँ सब ख़ुश रहे,
लेकिन समझ नहीं पाता
कैसे दूँ सबको आनंद तमाम ।
थक जाता हूँ कभी कभी
नाटक करते-करते।
कई मर्तबा लगता ऐसे
नहीं चाहिये मुझे कोई
जी लूँ तन्हाइयों मे
और सुकून से मर पाऊँ ...
दौलत शोहरत की अहमियत क्या
जब रिश्ते बेमानी हो जाये।
थक जाता हूँ कभी कभी
नाटक करते करते।

हम एक !

फ़ितरत है
दिल की
जुड़ना
और
टूट के बिखर जाना
और
फिर से जुड़ जाना
आदत है ख़्यालों की
सुख-दुख देना
आना
और चले जान।
लेकिन
जब जुड़ जाय
रूह से रूह
रह नही जाती
अहमियत
दिल दिमाग़ की
सोच विचार की
और हो जाते हैं
हम एक।

तुम

ख्वाबों में तुम
ख़यालों में तुम
मेरे हर
सवालों में तुम ।

आँखों में तुम
बाहों में तुम
मेरी हर
साँसों में तुम ।

बातों में तुम
रातों में तुम
मेरी हर
कविता में तुम ।

पास हो
चाहे दूर रहो
मेरे हर एक
कण-कण में तुम ।

कहाँ गई ?

कहाँ गई मेरी मम्मी
आज सुबह
जब खुली
मेरी आँख
बिस्तर ख़ाली था
तुम नहीं थी पास ।
मुझे विश्वास था
तुम किचन में
मेरे लिए टिफ़िन
बना रही होगी
कुछ ख़ास ।

एक कोने में
पापा बैठे थे उदास
मुझे लगा शायद
आज दुकान का है अवकाश ।
मैंने सोचा जल्दी
हो जाओ तैयार
नहीं तो स्कूल में
पड़ेगी बहुत मार ।
घर में सन्नाटा
कुछ लगा मुझे अजीब
चलो ढूँढते हैं
मम्मी को कहीं क़रीब ।

सब जगह ढूँढा
नहीं मिली कहीं
दादी को पूछा
कहाँ है मेरी माँ
हमेशा चहचहाने वाली
दादी की आँखों में
तैर रहा था पानी
मुझे याद आ गई
उदास मेरी नानी
मैं सोच में पड़ गई
ऐसी सिचुएशन में
कहाँ गई मेरी मम्मी ।

जब कहीं ना दिखी मम्मी
तो याद आई बड़ी मम्मी
पर उनकी भी चुप्पी
और भीगी आँखे
बता ना पाई
कहाँ गई मेरी मम्मी ।

भागी भागी गई
बड़े पापा के पास
सवाल बस वही था
कहाँ गई मेरी मम्मी ।

उदास चेहेरे से
निकली भारी आवाज़
बेटा मत ढूँढों मम्मी को
कुछ दिनों के लिए
वो गई हैं ईश्वर के पास ।

कुछ समझी
कुछ ना समझी
मन में बस एक ही सवाल
जब हैं सब आसपास
कहाँ खो गई मेरी मम्मी
जो मेरी सबसे
ज़्यादा है ख़ास ।

सर झुका के
आँखे बन्द करके
हाथ जोड़ के
ऊपर वाले से
एक ही है दरख्वास्त
आप का काम हो जाय तो
जल्द से जल्द
मेरी माँ को वापस
भेज दो मेरे पास ।

एक मलाल !

मैं समझ ना सका और
तुम समझा नहीं पाई ।

तुम्हारी पसंद
तुम्हारी नापसंद,
मैं समझ ना सका और
तुम समझा नहीं पाई ।

तुम्हें कैसे प्यार करुँ
तुम्हें कैसे चाहूँ,
मैं समझ ना सका और
तुम समझा नहीं पाई ।

तुम्हारी भावनाएँ
मैं कब आहत करता हूँ,
मैं समझ ना सका और
तुम समझा नहीं पाई ।

तुम्हारी ख़ामोशी,
तुम्हारी मूक आवाज़,
मैं समझ ना सका और
तुम समझा नहीं पाई ।

तुम्हारी आँखों में
पिघलते आँसू,
मैं समझ ना सका और
तुम समझा नहीं पाई ।

तुम्हारी ख़्वाहिशें
तुम्हारे सपनें,
मैं समझ ना सका और
तुम समझा नहीं पाई ।

जब समझ आया
तो देर हो गई,
ना पसंद रही
ना नापसंद
ना ख़्वाहिशें
ना सपने
ना आँसू
ना शब्द
बस एक मलाल.
और ज़िंदगी
गुज़र गई ।

मैं प्रकृति !

नदी ने समंदर से कहा
मैं इठलाई
बलखाई
मदमस्त लहराई
जिस रुप में भी आई
हर वक़्त हर घड़ी
बाँहें फैलाए
स्वागत में
खड़ा है तू ।

प्रकृति ने पुरुष से कहा
मैं सकुचाई
शरमाई
हर घड़ी की
तेरी अगुवाई
फिर मैंने
ये सज़ा क्यूँ पाई
हर वक़्त हर घड़ी
मुझे मारने पे
तुला है तू ।

धरती ने सूरज से कहा
मैं गरमाई

कभी घबराई
कभी लावा बनके
आँख दिखाई
चाहे कैसी भी हो
सूरत लेके आई
अपनी आँख तरेर
मुझे सबक सिखाते
खड़ा है तू

प्रकृति ने पुरुष से कहा
खाना दिया
पानी दिया
सोना दिया
चाँदी दिया
जो माँगा
जो चाहा दिया
फिर मैंने
ये सज़ा क्यूँ पाई
हर वक़्त हर घड़ी
मुझे रौंदने पे
तुला है तू ।

मुश्किल है !

सीख ना पाया
मैं
आँखो को पढ़ना
कठिन है
मेरे लिये
मौन को
समझना
मुश्किल है
इन इशारों को
बूझना
इस दिल की
बातों पर
नहीं है
भरोसा
पर
मुश्किल है
इस दिल को
समझाना

कुछ रिश्ते !

हर गाँव
का नाम
होता है
हर गली की
पहचान
होती है
लेकिन
कुछ रिश्ते
ऐसे है
जिनका
कोई नाम
नहीं होता।

कुछ जन्म
से होते हैं
और कुछ को
समाज जोड़
देता है
लेकिन
कुछ रिश्तों की
डोर नहीं होती।

कुछ रिश्तों में
वात्सल्य बसता है
कुछ में स्नेह
और कुछ
में प्यार
पर कुछ
रिश्तों का
आधार ही नहीं

कुछ रिश्तों
में हँसी
बसती है
ओर कुछ में
दर्द
पर कुछ
में मौन
उम्र भर।

ना जाने
कौन सा
रिश्ता
तुझसे जोड़ूँ
समझ मेरी
बौनी हो जाती
तुझ तक
पहुँच कर।

चंचल मन की !

नहीं बनना मुझे मोती
धागा ही रहने दो,
बिखरे हुए मोतियों को
माला में पिरोने दो।

नहीं बनना मुझे क़लम
स्याही ही रहने दो,
बिखरी हुई भावनाओं को
शब्दों में संजोने दो।

नहीं बनना मुझे फूल
ख़ुशबू ही रहने दो,
टूटे हुए सपनों को
फिर से महकने दो।

नहीं बनना मुझे आँखें,
आँसू ही रहने दो,
चंचल मन की भावुकता में
अविरल बह जाने दो।

कभी ना छूटे

नहीं चाहिये मुझे
एवरेस्ट की
ऊँचाईयाँ,
जहाँ
न ज़िंदगी है
ना जीवन।
नहीं चाहिये
वो सूनापन
जहाँ
न बंदगी है
ना मानव मन।
नहीं चाहिये
वो वीरानियाँ
जहाँ
न चिड़िया है
ना उपवन।
नहीं चाहिये
वो दूरियाँ
न तुम हो
ना तुम्हारा
अपनापन।
रहने दो

मेरे पाँव
ज़मीं पर
हाथों में रहने दो
अपना हाथ
संग चलती रहो
इस जीवन में
कभी ना
छूटे
तुम्हारा साथ।

सोचो !

सब कुछ है व्याप्त
उसी से होगा प्राप्त
उसे ही समझो पर्याप्त
नहीं तो हो जाएगा समाप्त।

मुझे यह बता !

कोई उधार दे तो
वापस चुका दूँ
कोई उपकार करे तो
उपकार कर दूँ
कोई सुख दे तो
ख़ुशियाँ बाँट दूँ
कोई प्यार दे तो
मै प्यार दे दूँ
लेकिन मेरे रब
मुझे यह बता
जो मेरी जिंदगी में
आशीर्वाद बन कर आये तो
इज़्ज़त के सिवा
क्या दूँ ...!

मंजूर नहीं !

किसी की निगाहों में चढ़ ना पाऊँ
इसका मुझे गिला नहीं,
किसी की आँखो से गिर जाऊँ
यह मुझे मंज़ूर नहीं।

इंतज़ार

खिड़की पर
नज़र टिकाये
करते थे इंतज़ार
डाकिये का
शायद उनका
पैग़ाम ले आये,
अब ऑनलाइन
रहना पड़ता है
वाट्सएप पर
कहीं बिना पोस्ट किये
चले न जाय।

संभालो !

अनमोल बनने की चाहत नहीं
ख़्वाहिश बस इतनी सी है
कि कोई मुझे अपना
ख़ास बना ले।

हम अनमोल तो नहीं
पर आँख से गिरे आँसू की तरह
ख़ास ज़रूर हैं
संभालो नहीं तो
गिर कर बिखर जायेंगे।

हेमंत लोढ़ा

श्री हेमंत लोढ़ा जी का जन्म १२ जून १९५६ को जोधपुर के जैन मध्यम परिवार में हुआ। मुम्बई से १९८० में आपने सीए किया। देश विदेश के भ्रमण के पश्चात् आपने २००२ में नागपुर में स्थायी रुप से रहने का निर्णय लिया। १९९४ में श्री जोन विजयरंगम जी की प्रेरणा से पढ़ने व जानने की आपकी रुचि और बलवती हुई। उसके बाद पुस्तकें पढ़ना आपके जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

श्री हेमंत लोढ़ा जी की अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। **Words of Wisdom (WoW), A to Z Entrepreneurship, Nectar of Wisdom (NOW)** तथा श्रीमद्भगवद्गीता : रूप–कविता, अष्टावक्र महागीता और कही अनकही, समणसुत्तं (सृजनबिंब प्रकाशन)।

श्री हेमंत लोढ़ा जी समाजसेवा में भी अत्यंत रुचि रखते हैं। आप हेल्पलिंक चेरीटेबल ट्रस्ट के संस्थापक व प्रबंधक हैं। यह संस्था निर्धन बच्चों को पढ़ाने में सहयोग करती है।

श्री हेमंत लोढ़ा जी अभी एसएमएस एनवोकेयर लिमिटेड में मुख्य प्रबंधक के रुप में कार्यरत हैं। यह संस्था पर्यावरण प्रबंधन के क्षेत्र में कार्य करती है।

श्री हेमंत लोढ़ा जी को छोटे लेख (blogs) लिखने में रुचि है व अब तक आपके २५० से अधिक लेख online प्रकाशित हो चुके हैं जिन्हें www.hemantlodha.com पर पढ़ा जा सकता है। इनकी पुस्तकें online amazon व google play पर उपलब्ध हैं।

■ ■ ■

सृजन बिंब प्रकाशन

ISBN : 978-81-941621-0-0